सफलता के पांच सूत्र

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सभी मनुष्य अपने जीवन में सफल होना चाहते हैं। कोई भी असफल नहीं होना चाहता। मन में दृढ़ निश्चय और समय का नियोजन सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र है। सफल होने के लिए हमें भाव क्रिया के साथ कार्य करना चाहिए। कार्य करते समय मन को कार्य में लगाना चाहिए। भाव क्रिया वर्तमान से सम्बन्धित है। भाव क्रिया करने से धीरे–धीरे कार्मण शरीर शिथिल हो जाता है। ध्यान में एकाग्रता बढ़ती है। ध्यान भीतर की तरफ जुड़ जाये तो आत्मज्ञान हो जाता है। इससे मानसिक शान्ति मिलती है। श्वसन तंत्र, नाड़ी तंत्र, पाचन तंत्र और उत्सर्जन तंत्र ठीक रहते हैं। भाव क्रिया से मनुष्य स्व में अवस्थित हो जाता है। भाव क्रिया से एकाग्रता बढ़ती है और सफलता प्राप्त हो जाती है।

सफलता का दूसरा सूत्र है–प्रतिक्रिया विरति। विवाद क्रिया–प्रतिक्रिया से बढ़ता है। तुरन्त प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करनी चाहिए। किसी ने गाली दी तो उसे समझाकर के शान्त कर देना चाहिए। इससे विवाद शान्त हो जाता है। क्रोध सामने क्रोध को देखकर बढ़ता ही है। क्रोध में आदमी अन्धा हो जाता है। उसे कुछ दिखाई नहीं देता। इसलिए शान्त रहना ही ठीक रहता है। सफलता का तीसरा सूत्र है– टकराव टालिए। जहां कई मनुष्य एक साथ रहते हैं वहां कभी–कभी किसी विषय को लेकर टकराव की स्थिति आ जाती है। टकराव हो टालने का प्रयास करना चाहिए। जे कम्मे सूरा ते धम्मे सूरा अर्थात् जो कर्मवीर होते हैं वे धर्मवीर भी होते हैं। टकराव से शक्ति नकारात्मक कार्यों में लगती है। टकराव से तनाव बढ़ता रहता है। इससे अशान्ति बनी रहती है। इसलिए टकराव को छोड़कर समभाव की स्थिति में रहना चाहिए।

सफलता का अगला सूत्र है– मैत्री। सभी प्राणियों के साथ मैत्री भाव दिखाना चाहिए। सभी को अपने समान समझना चाहिए। चौरासी लाख जीव योनियों के प्रति बुरा भाव नहीं लाना चाहिए। कर्ता भाव नहीं रखना चाहिए। अपने को केवल निमित्त समझना चाहिए। कर्ता व्यवस्थित शक्ति है। यह कुदरत के कानून से संचालित हो रहा है। सफलता का अगला सूत्र

मितभाषण है। मितभाषण का मतलब है कम बोलना। जो वाचाल होता है वह दूसरों की स्तुति निन्दा करता रहता है। इससे कर्म बन्धन होता है। कम बोलो, सत्य बोलो, मधुर बोलो, पहले तोलो फिर बोलो। परस्पर प्रेम से वार्तालाप करना चाहिए।

प्रकृति के साथ तालमेल बैठाना, प्रकृति के साथ जीना, प्रकृति का संरक्षण करना, मानव मात्र के साथ मैत्री का व्यवहार करना, सभी जीवों को अपने समान मानना, और सर्वभूत हित चिन्तन करना, बड़ों का सम्मान करना आदर्श जीवन शैली का मूलमंत्र है। चौरासी लाख जीव योनियों में मानव सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए मनुष्य को ऐसा आचरण करना चाहिए कि उसका सब अनुकरण करे। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पंचमहाभूतों की पूजा हमारे देश में अनादिकाल से हो रही है। हमारे पूर्वजों को यह ज्ञात था कि यदि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ किया जायेगा तो प्रकृति रूष्ट होकर के मानव को उसका दंड अवश्य देगी। प्रकृति के जितने भी अवयव हैं, वे सभी प्रकृति के साथ तालमेल बैठाकर जीवन–यापन करते हैं।

मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो प्रकृति के प्रतिकूल आचरण करता है। प्रकृति के जितने भी उपादान है वे सभी समान बर्ताव करते है। रात दिन का होना, सूर्य और चन्द्रमा का अपने गति के अनुसार पथ पर चलना, षड ऋतुओं का होना और जलवायु सम्बन्धी परिवर्तन ये सब क्रियाएं प्रकृति अपने आप करती रहती है। रात और दिन की रचना के पीछे सिद्धांत यह है कि दिन में मनुष्य काम करे और रात में शयन करे। यह मानव के लिए है। यदि इसके विपरीत आचरण किया जाता है तो यह दानव का काम होता है। किन्तु आजकल भिड़मभाड़ वाली जिन्दगी में रात दिन का अन्तर ही समाप्त हो गया है। इसलिए जीवन–यापन करने के लिए लोग रातों दिन काम करते हैं।

समय का नियोजन स्वस्थ जीवनचर्या के लिए बहुत आवश्यक है। जब शरीर स्वस्थ रहेगा तो दिमाग भी स्वस्थ रहेगा। समाज मे रहनेवाले हर वर्ग के लिए समय का नियोजन आवश्यक है। विद्यार्थी को चाहिए कि वह समय से अध्ययन करें और अपने लक्षित मंजिल का प्राप्त करें। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह अपने अध्यापन के कार्य को पूर्ण मनोयोग के साथ करें। किसान का कार्य यह है कि वह समय के अनुकूल फसलों को बोये और अधिक से अधिक अन्न उत्पन्न करे। इसी प्रकार राजनेता, अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर और व्यवसायी सभी

अपने–अपने उत्तरदायित्वों को समझते हुए कार्य करे जिससे समाज में एक रूपता बनी रहे और राष्ट्र का विकास हो।

समय के नियोजन के बिना उन्नति होना असंभव है। जिस मौसम में जो फसल बोनी जानी है यदि उसको न बोकर अन्य फसल का उत्पादन करने का प्रयास किया जायेगा तो सफलता नहीं मिलेगी। इसी प्रकार विद्यार्थी अपने विद्यार्थी जीवन में यदि विद्यार्जन करने में लापरवाही दिखायेंगे तो जीवनभर उनकों कष्ट उठाना पड़ेगा। इससे यह सिद्ध होता है कि समय का जीवन में कितना अधिक महत्व है। गया हुआ समय फिर जीवन में लौटकर नहीं आता। समयानुकूल आचरण करने से जीवनचर्या नियमित रहती है।